पूर्वोत्तर भारत का हिंदी सिनेमा

अतुल वैभव

कला मनोरंजन के अन्य माध्यमों की तरह सिनेमा का इतिहास भी अधिक पुराना नहीं है। अगर फिल्मों के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालें तब पाते हैं कि इसका संबंध कहीं न कहीं साहित्य से ही रहा है। "सिनेमा अपने प्रारंभिक दौर में साहित्य की विभिन्न विधाओं को आधार बना कर अपनी यात्रा शुरू किया।"[1] साहित्यिक विधा रंगमंच अर्थात् नाटक को पर्दे पर रूपांतरित करके दिखाने की कला से ही सिनेमा का जन्म हुआ है। वर्तमान समय में मनुष्य के लिए मनोरंजन के अनगिनत साधन होने के बावजूद सिनेमा की उपयोगिता या प्रासंगिकता इसलिए बनी हुई है क्योंकि यह कम से कम समय में ही ज्यादा से ज्यादा लोगों (दर्शकों) को प्रभावित करता है। "कहना गलत न होगा कि सिनेमा, साहित्य से अधिक प्रभावशाली और आम जनता तक सरलता से पहुंचने वाला माध्यम है।"[2] साहित्य जहां पढ़े-लिखे लोगों को ही अपने से जोड़ पाता है वहीं सिनेमा का जुड़ाव सम्पूर्ण जनमानस से होता है। सिनेमा दृश्य के साथ-साथ श्रव्य भी है और इसकी यही विशेषता है जिससे लोग आकर्षित होते हैं।

सिनेमा का इतिहास सौ वर्षों से अधिक का हो चुका है। भारतीय सिनेमा ने इन सौ वर्षों में अनेक विषम परिस्थितियों का सामना किया है। "भारत की 20 से भी अधिक भाषाओं में, प्रति वर्ष लगभग 1500-2000 तक फिल्में बनती हैं। अकेले हिंदी में ही लगभग 1 हज़ार फिल्में हर वर्ष बन रही हैं।"[3] 'देश में फिल्मों से होने वाली आय में हिंदी फिल्मों का योगदान 43 प्रतिशत है तो वहीं 57 प्रतिशत आय में अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान है। अकेले हॉलीवुड में जितनी फिल्में बनती हैं उसके दो गुना सिर्फ हिंदी भाषा में बनती हैं।

इस शोध आलेख में हिंदी सिनेमा के इसी महत्व को पूर्वोत्तर भारत के संदर्भ में रखने का प्रयास किया गया है। आज हिंदी सिनेमा का विस्तार सिर्फ हिंदी भाषी समाज तक ही सीमित नहीं है बल्कि दक्षिण, पश्चिम और पूर्वोत्तर भारत के लोगों में भी प्रचलित हो रहा है, यहाँ के सिनेमा घरों में तो हिंदी फिल्में प्रदर्शित होती ही हैं साथ ही अब ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा भी बड़ी संख्या में पूर्वोत्तर भारत के लोग हिंदी सिनेमा को पसंद कर रहे हैं/से जुड़ रहे हैं। एक जिज्ञासा मन में बार-बार आती है कि हिंदी फिल्मों में उत्तर भारत, दक्षिण भारत, पश्चिम भारत, मध्य भारत तथा पूर्वी भारत के कलाकार या पृष्ठभूमि तो बहुतायत देखने को मिलती है, लेकिन एक सिनेमा प्रेमी के नाते मेरे जेहन में यह बात आती है कि क्या पूर्वोत्तर भारत जो देश के 8 प्रमुख राज्यों, दर्जनों जनजातियों, दर्जनों भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का महासागर है, उसका हिंदी सिनेमा में योगदान है भी या नहीं? या फिर हिंदी सिनेमा में पूर्वोत्तर भारत किस प्रकार से आया है? और यह ऐसी जिज्ञासा है जिसका उत्तर ढूँढ़ना अति आवश्यक है। आज हिंदी सिनेमा और पूर्वोत्तर भारत को लेकर अनेक ऐसे प्रश्न हैं।

क्या हिंदी फिल्मों में पूर्वोत्तर भारत के कलाकार होते हैं? क्या पूर्वोत्तर भारत के कलाकार को हिंदी सिनेमा में काम मिलता है? क्या हिंदी सिनेमा का विस्तार पूर्वोत्तर भारत में हुआ है? जिनका उत्तर खोजना अति आवश्यक है।

पूर्वोत्तर भारत के सैकड़ों सिनेमा घरों में प्रति वर्ष दर्जनों हिंदी फिल्में प्रदर्शित होती हैं। करोड़ों का व्यापार एवं मुनाफा हिंदी फिल्मों को इन राज्यों से होता है। पर क्या बॉलीवुड में नॉर्थ ईस्ट के कलाकार, निर्देशक, गायक, निर्माता आदि का उसी अनुपात में योगदान है? पत्रलेखा पॉल ने इंडियन एक्सप्रेस को दिये इंटरव्यू में पत्रकार के प्रश्न- हिंदी सिनेमा में नॉर्थ ईस्ट इंडिया के कलाकारों की संख्या इतनी कम क्यों है? क्या किसी नॉर्थ-ईस्ट के कलाकार का हिंदी सिनेमा में इंट्री करना बहुत मुश्किल है? का उत्तर देते हुए कहती हैं- "हाँ यह बहुत मुश्किल है क्योंकि जो पटकथा लिखी जाती है उसमें उनके लिए कोई रोल होता ही नहीं या बहुत कम होता है। लेखक के दिमाग में पहले से ही एक चेहरा होता है, इस वजह से वो चंडीगढ़, दिल्ली या फिर पंजाब की लड़की को रोल देते हैं। अगर निर्माता किसी फिल्म में दक्षिण भारतीय हैं तो वो ऐसे कलाकार को लेते हैं जो या तो दक्षिण भारतीय हो या फिर वैसी दिखने में हो। लेकिन नॉर्थ ईस्ट के कलाकारों की शारीरिक बुनावट अलग है और फिर नॉर्थ ईस्ट के लेखक बहुत कम हैं, जो कि नॉर्थ ईस्ट को केंद्र में रख कर पटकथा लिख सकें। मेरी समझ से यह इसलिए नहीं है कि वहाँ के लोगों को अवसर नहीं मिलता, बल्कि इसलिए है कि कहानी में वैसा कोई पात्र ही नहीं होता है।"[4] पत्रलेखा पॉल कि बातों से तो यही प्रतीत होता है कि क्या बॉलीवुड सिर्फ मुनाफे के बारे में सोचता है? एक तरफ तो हमें बताया, पढ़ाया जाता है कि किसी भी भाषा के सिनेमा में वहाँ की संस्कृति के विविध पक्ष उभर कर आते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में तो यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। क्या नॉर्थ ईस्ट के लोग भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं? क्या हिंदी फिल्में सिर्फ हिंदी भाषी राज्यों के लोगों/दर्शकों के लिए बनाई जाती हैं? क्या हिंदी सिनेमा में काम करने के लिए पंजाब, महाराष्ट्र, दिल्ली, यूपी, बंगाल या बिहार का होना महत्वपूर्ण है? इस आलेख में हिंदी सिनेमा का इसी दृष्टि से अध्यन किया है और जानने की कोशिश की है कि हिंदी सिनेमा जगत में कौन-कौन से कलाकार हैं जिनका ताल्लुक पूर्वोत्तर भारत से है।

हिंदी सिनेमा जगत में पूर्वोत्तर भारत से संबंध रखने वाले कलाकारों में सबसे पहला नाम आता है 'डैनी डेन्जोंगपा' का। हिंदी सिनेमा में 'अमरेश पूरी' के बाद अगर कोई दूसरा खालयनक हुआ है जो दर्शकों के बीच में लोकप्रिय रहा हो तो वो डैनी हैं। शोले में गब्बर सिंह, मिस्टर इंडिया में मोगैंबो, अग्निपथ में 'कांचाचीना' जैसे पात्रों (खलनायक) अभिनेता से अधिक लोकप्रियता हासिल हुई है। खलनायक के बिना भारतीय फिल्में या तो बनती नहीं है या दर्शकों को पसंद नहीं आती हैं (कुछ फिल्मों को छोड़ कर)। "लगभग 190 हिंदी फिल्मों में काम कर चुके डैनी ने नेपाली, बांग्ला, तमिल और तेलगु के साथ ही हॉलीवुड में 'ब्रैड पिट' के साथ 'सेवेन इयर्स इन तिब्बत' में अभिनय किया है।" अपने अभिनय के जादू से दर्शकों के दिलों में राज करने वाले डैनी 2003 में पद्म श्री पुरस्कार से नवाजे जा चुके हैं। "हिंदी फिल्मों के दर्शक भले ही उन्हें खलनायक समझते हों, लेकिन उससे भी पहले वे एक गायक हैं, चित्रकार और लेखक हैं। संगीतकार हैं। माली

हैं। पर्यावरण के संरक्षक हैं।"[5] सिक्किम में जन्में डैनी ने अपने अभिनय से हिंदी सिनेमा के साथ-साथ पूर्वोत्तर भारत का भी मान बढ़ाया है। उन्होंने खलनायिकी को एक नया आयाम दिया। अपने शुरुआती दिनों में डैनी ने फिल्मों में सकारात्मक भूमिकाओं में अभिनय किया था। इनकी पहली हिंदी फिल्म मेरे अपने (1971) थी। डैनी ने द बर्निंग ट्रेन (1980), बंदिश (1980), बुलंदी (1981), गंगा मेरी माँ (1983), धर्म और कानून (1984), सनम बेवफा (1991), खुदा गवाह (1992), क्रांतिवीर (1994), चाइना गेट (1998), लज्जा (2001), जय हो (2014), मणिकर्णिका (2019) आदि फिल्मों में अपने अभिनय से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया है।

डैनी के बाद पूर्वोत्तर भारत का जो दूसरा सर्वाधिक चर्चित नाम हिंदी सिनेमा में आता है वह 'भारत रत्न भूपेन हजारिका' का है। हिंदी भाषी क्षेत्रों में पूर्वोत्तर भारत को लेकर लोगों में ज्ञान की कमी है या फिर लोग वहाँ के विषय में जानना ही नहीं चाहते हैं। अमूमन उत्तर भारतीय लोगों को शिलांग, नोंगफो, आइजोल, लुंगलेई, लॉन्गतलाई, इम्फाल, तबांग आदि का नाम लेने पर वह पूछते हैं कि यह कहाँ है? परंतु धीरे-धीरे ही सहीयह धारणा अब बदल रही है। अब सभी शिलांग, गंगटोक, इम्फ़ाल, ईटानगर, आइजोल और अगरतला को जानने लगे हैं और अब सब मेघालय, मिजोरम, सिक्किम को भी जानने लगे हैं, स्थितियाँ बदल रही है। देश की राजनीति हो या अन्य क्षेत्र अब पूर्वोत्तर के लोगों की भी भागीदारी भी तेजी से बढ़ रही है। देश के अन्य हिस्सों से भी लोग पूर्वोत्तर भारत में पर्यटक बनकर ही सही घूमने जाने लगे हैं और वहाँ की संस्कृति से वाकिफ़ होने लगे हैं।

अमूमन उत्तर भारत में भूपेन हजारिका को लोग उसी प्रकार जानते हैं, जिस प्रकार गुवाहाटी को (नॉर्थ ईस्ट का मतलब गुवाहाटी उसी प्रकार नॉर्थ ईस्ट के कलाकारों की बात होती है तब सिर्फ भूपेन दा जैसे गिने चुने नाम)। यहाँ बताना महत्वपूर्ण है कि भारत से बाहर भूपेन हजारिका पूर्वोत्तर भारत के आइकॉन के रूप में जाने जाते हैं। "वे पूर्वोत्तर भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध सांस्कृतिक आइकॉन हैं।"[6] यहाँ उनकी तुलना अन्य किसी भी व्यक्ति से करना उचित नहीं होगा। हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि असमिया भाषा, संस्कृति, सिनेमा, संगीत के लिए भूपेन हजारिका, असम के लोगों के लिए वाकई में एक पहचान हैं। असमिया ही नहीं, बल्कि हिंदी सिनेमा जगत मेंभी वे एक गायक, संगीतकार औरफिल्म निर्माता-निर्देशक के रूप में विख्यात हैं। 'मेरा धर्म मेरी माँ' सन् 1976 ई. में आई हिंदी फिल्म का निर्देशन उन्होंने ही किया था। सन् 1986 ई. में आयी हिंदी फिल्म 'एक पल' में अभिनय के साथ-साथ निर्माता, गायक और संगीतकार की भूमिका में भी वही थे। भूपेन दा ने दर्जनों हिंदी फिल्मों में किसी न किसी रूप में अपना योगदान दिया है। भारतरत्न, पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्म विभूषण, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, संगीत अकादमी पुरस्कार सहित लगभग 100 से भी अधिक पुरस्कार पाने वाले भूपेन हजारिका सही मायानों में पूर्वोत्तर भारत के आइकॉन के रूप में हिंदी सिनेमा में याद किए जाते रहेंगे। हिंदी सिनेमा में रुचि रखने वाले या फिर गंभीरता से रुचि रखने वाला शायद ही कोई व्यक्ति डैनी और फिर भूपेन हजारिका का नाम न जान रहा होगा।

 ISSN: 2582-6530

2017 ई. में पिंक फिल्म आई थी जिसकी देश-विदेश में खूब चर्चा हुई। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार सहित कई पुरस्कार इस फिल्म को मिले। इस फिल्म की मुख्य भूमिका में अमिताभ बच्चन, तापसी पन्नु, कृति कुल्हारी के साथ 'आन्द्रेया तारियांग' थीं। आन्द्रेया तारियांग जिनका जन्म शिलांग में हुआ है। नॉर्थ ईस्ट के लोगों को तो शायद यह पता होगा पर, भारत के अन्य किसी भी दूसरे राज्य के लोगों को शायद ही यह पता होगा कि आन्द्रेया शिलांग की रहने वाली हैं और अगर यह पता भी होगा की शिलांग की हैं तो फिर उनके मन में यह विचार आता है कि ये तो बाहर की हैं, मतलब भारतीय नहीं है। ऐसा मैंने इस फिल्म को देखने के दौरान अनुभव भी किया कि किस प्रकार से इस फिल्म देखने के दौरान मेरे दिल्ली के एक मित्र ने सिनेमा हॉल में ही कह डाला- 'ये जो विदेशी है न इसकी हिंदी बहुत अच्छी है, लग ही नहीं रहा कि विदेश की है।' तब मैं सन्न रह गया कि उसने फेस देख कर ही यह जज कर लिया कि वह भारत की नहीं है। वैसे लोगों की इस मानसिकता के लिए यहाँ की शिक्षा व्यवस्था और राजनेताही जिम्मेदार हैं। इस फिल्म में भी इसी यथार्थ को दिखाया गया है कि किस प्रकार पूर्वोत्तर भारत के लोगों के साथ दिल्ली (जो कि देश की राजधानी है, जहां देश के सभी नागरिकों का एक समान अधिकार होना चाहिए) में उनके साथ अभद्रतापूर्ण व्यवहार किया जाता है।

2016 ई. में रितिक रोशन अभिनीत फिल्म मोहन जोदारो (2016) आई जिसमें असम के रहने वाले 'दीगांता हजारिका' के अभिनय की भी खूब तारीफ हुई। हजारिका असम के नगाँव जिले के रहने वाले हैं। नागालैंड के अभिनेता 'ज़्होखोई चुजहों' ने फोर्स-2 में अभिनय का जलवा दिखाया है। उन्होंने इससे पहले सुशांत सिंह राजपूत अभिनीत फिल्म ब्योमकेश बक्शी (2015) में भी अभिनय किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध की एक घटना को केंद्र में रख कर बनी फिल्म रंगून (2017) में मणिपुर की 'लिन लाइशरम' ने अपने अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया। साथ ही फिल्म उमरिका (2015) में भी इन्होंने शानदार अभिनय किया है। अरुणाचल प्रदेश के अभिनेता 'रिकेन ङ्गोंले' रणवीर कपूर के साथ जग्गा जासूस (2017) में शानदार अभिनय कर के दिखा चुके हैं। अरुणाचल प्रदेश की ही एक अभिनेत्री ने मोहेनजोदारो में अपने अभिनय के जादू से हिन्दी सिनेमा के दर्शकों को काफी प्रभावित किया है।

पूर्वोत्तर भारत के कलाकार अपने अभिनय के जादू से हिंदी सिनेमा को ही मजबूती प्रदान नहीं कर रहे हैं बल्कि हिंदी सिनेमा में एक नई परंपरा को भी जन्म दे रहे हैं। हिंदी फिल्में, पूर्वोत्तर में जितनी तीव्र गति से विस्तार पा रही हैं उसी गति से वहाँ हिंदी भाषा भी मजबूत होती जा रही है। पूर्वोत्तर के लोगों का हिंदी सिनेमा जगत में अभिनय करना देश को एकजुट करने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। देश की असली पहचान जिस अनेकता में एकता की बात की जाती है उसको हिंदी सिनेमा आगे बढ़ाने या कह सकते हैं कि विस्तार देने का काम कर रहा है। आखिरकार क्यों पूर्वोत्तर भारत के लोग अपने आपको शेष भारत से कटा हुआ महसूस करते हैं और अलग रहना पसंद करते हैं? इसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि उनकी अपनी संस्कृति, वेश-भूषा, भाषा-बोली, खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन है जो भारत के अन्य प्रान्तों से अमूमन भिन्न है, जिससे वहाँ के लोग मुख्यधारा से जुड़ नहीं पाते हैं और न ही मुख्यधारा के लोग उन्हें खुद से

जोड़ पाते हैं। यहाँ मुख्य धारा कहने का तात्पर्य है हिंदी भाषी क्षेत्रों से या देश के वे राज्य जहां आधारभूत संरचनाओं का विकास हो रहा है या फिर जहां के लोग राष्ट्रीय राजनीति में सक्रियता से हिस्सा लेते हैं (महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब या फिर दक्षिण भारत के राज्य)। देश के प्रमुख बड़े-बड़े नेता इन्हीं राज्यों से रहे हैं और उनका ध्यान सिर्फ उनके अपने क्षेत्र विशेष के विकास तक ही सीमित रहा है जिससे कि देश के अन्य क्षेत्र खास करके पूर्वोत्तर भारत पिछड़ता चला गया। पूर्वोत्तर भारत की हमेशा से ही शेष भारतियों के द्वारा राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से उपेक्षा की जाती रही है। “शेष भारत के लोग पूर्वोत्तर को हमेशा उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। अधिकाधिक लोगों में पूर्वोत्तर के बारे में जानने-परखने की उत्सुकता नहीं है, जिसके कारण पूर्वोत्तर को शेष भारत से उपेक्षित होकर रहना पड़ता है।”[7]

आज तक पूर्वोत्तर भारत में ठीक से यातायात के साधन तक विकसित नहीं हो पाये हैं जिससे वे देश के अन्य हिस्सों से कम से कम समय में जुड़ सकें। उन्हें अगर देश के अन्य हिस्सों में आना हो तो बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सरकारी नौकरी हो या राष्ट्रीय राजनीति उनकी पहुँच लगभग न के बराबर रही है, इस वजह से वे मुख्यधारा से कटे रहे हैं। न तो उत्तर, दक्षिण, पश्चिम भारतीय उनके साथ नजदीकी और अपनत्व का भाव रखते हैं और न ही वे (पूर्वोत्तर के लोग) उनके साथ ऐसा संबंध रख पाते हैं। हम आए दिन देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाली ऐसी अनेक घटनाएँ सुनते, पढ़ते और देखते हैं जिसमें पूर्वोत्तर भारत के लोगों के साथ दुर्व्यवहार या फिर अभद्र व्यवहार किया जाता है। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, पुणे आदि देश के बड़े शहर हैं जहां, शिक्षा, नौकरी तथा व्यापार हेतु पूर्वोत्तर भारत के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं और उन्हें वहाँ अनेक प्रकार से प्रताड़ित होना पड़ता है। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीत चुके फिल्म निर्माता जहनु बरुआ ने कहा है कि “आजादी के बाद से ही शेष भारत के लोगा नॉर्थ ईस्ट के लोगों को अपने से अलग समझते रहे हैं। बॉर्डर के नजदीक हमेशा डर का माहौल रहता है। वे उस क्षेत्र से कोई भी सूचना लेना-देना नहीं चाहते। संयोग से अब इस स्थिति में बदलाव हो रहा है।”[8]

हिंदी सिनेमा एक सशक्त साधन (माध्यम और प्लेटफॉर्म) है जिससे कि इस दूरी (पूर्वोत्तर भारत और शेष भारत के बीच) को पाटा जा सकता है या पाटा जा रहा है। हिंदी फिल्में पूर्वोत्तर भारत के लगभग आठो राज्यों के लोगों के बीच अब खासी पसंद की जा रही है। पहले कुछ सीमित क्षेत्रों या लोगों तक इसकी पहुँच थी और वह भी हिंदी फिल्मों के गाने ही परंतु आज फिल्में भी यहाँ की अधिसंख्य जनता के द्वारा पसंद की जा रही हैं। अगर हिंदी सिनेमा में यहाँ के लोगों का योगदान बढ़ेगा तो यह बहुत ही क्रांतिकारी कदम माना जाएगा। किसी भी भाषा के साहित्य का अध्ययन करने के लिए उस भाषा विशेष की अच्छी जानकारी होनी चाहिए जबकि फिल्मों को समझने के लिए ऐसा नहीं है। हिंदी फिल्मों ने जिस प्रकार से पूरे हिंदुस्तान को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। पूर्वोत्तर भारत के लोगों का हिंदी सिनेमा में अभिनय करने से वहाँ के लोगों का जुड़ाव हिंदी सिनेमा से और अधिक होने लगा है। ऐसा होने से उनके मन में जो एक अलगावादी नजरिया बना हुआ है उसमें भी बदलाव आएगा और वे भी खुद को भारत से कटा हुआ नहीं

बल्कि जुड़ा हुआ महसूस करेंगे। साथ ही शेष भारत के लोगों के लिए भी पूर्वोत्तर भारत के लोगों से अपनत्व बढ़ेगा तथा हिंदी सिनेमा का भी विस्तार होगा।

हिंदी सिनेमा में काम करने वाले पूर्वोत्तर भारत के कुछ ऐसे भी कलाकार हैं जिनका अभिनय उत्कृष्ट रहा है, परंतु किसी को यह नहीं पता है कि वे कलाकार हमारे देश के ही हैं। ऐसे ही एक कलाकार इम्फाल, मणिपुर के हैं जिनका नाम है 'बिजौ थाहङ्ग्जम'। इन्होंने रॉबिनहूड के पोते (2016), 3 स्मोकिंग बैरेल्स (2017), कर्मा कैफे (2019), पेनाल्टी (2019) और अजय देवगन अभिनीत फिल्म शिवाय (2016) में अभिनय किया है। पेनाल्टी फिल्म में मणिपुर के ही एक और अभिनेता 'लुकराम स्मील' ने भी अभिनय किया है। अपनी खूबसूरती के लिए फेमस 'गीतांजली थापा' सिक्किम की रहने वाली हैं। 2013 में आयी फिल्म मानसून शूटआउट के लिए उन्हें नेशनल फिल्म अवार्ड दिया गया। 2017 में उनकी दो फिल्में आई थीं- पहली फिल्म ट्रैप्ड और दूसरी इमरान हाशमी के साथ टाइगर्स। रीमा देबनाथ अगरतला की रहने वाली हैं। इन्होंने कई हिंदी फिल्मों में कार्य किया है। सलमान खान अभिनीत बॉडीगार्ड (2011), पीके (2014), मछली जल की रानी है (2014), वेलकम बैक (2015) आदि कई फिल्मों में अभिनय किया।

असम के 'केनी बसुमतरी' ने यारा (2020) फिल्म में अभिनय किया है। असम के ही 'मॉनसून बरुआ' ने चाईनिज भसड़ में अभिनय किया है। असम के 'सिद्धार्थ बोको' ने भी 3 स्मोकिंग बैरेल्स (2017) में अपने अभिनय के जादू से दर्शकों का मन मोह लिया था। असम की ही रहने वाली अभिनेत्री 'परिणीता बोर ठाकुर' ने फोर्स (2011), चलो दिल्ली (2011) और कुर्बान (2009) में अपने अभिनय के जलवे बिखेरे हैं। हिंदी फिल्म सिटिलाइट (2014) में शिलांग की रहने वाली पत्रलेखा पॉल ने जबर्दस्त अभिनय किया है। अरुणाचल प्रदेश की अभिनेत्री 'देवी दोलो' ने भी मोहेनजोदारो में अपने अभिनय से पूर्वोत्तर भारत का मान सम्मान बढ़ाया है। असम के गोलपाड़ा जिले के 'आदिल हुसैन' को आप सभी ने एक नहीं बल्कि कइयों हिंदी फिल्मों में देखा होगा, परंतु आप में से बहुत कम लोगों को पहले से यह जानकारी रही होगी कि आदिल हुसैन असम के रहने वाले हैं। दर्जनों राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित आदिल हुसैन ने सिर्फ हिंदी सिनेमा में ही अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं किया है, बल्कि हॉलीवुड की फिल्म, 'द रिलाक्टेंट फाउंडमेंट लिस्ट'(2012) और 'लाइफ ऑफ पाइ (2012)' में अपने अभिनय का जादू दिखा चुके हैं। इन्होंने हिंदी के अलावा, असमिया, बांग्ला, तमिल, मराठी, मलयालम और फ्रेंच फिल्मों में भी अपने अभिनय का जादू बिखेरा है। पूर्वोत्तर भारत क्या बल्कि पूरे हिंदुस्तान में ऐसा बहुत कम कलाकार या अभिनेता होगा जिसने इतनी भाषाओं के सिनेमा में काम किया हो। इनकी कुछ प्रमुख हिंदी फिल्में जिसमें इन्होंने अभिनय किया है, कमीने (2009), इश्किया (2010), एजेंट विनोद (2012), इंग्लिश विंग्लिश (2012), लुटेरा (2013), द एक्सपोज (2014), पार्च्ड (2015), फोर्स-2 (2016), कमांडो-2 (2017) जैसी सुपरहिट फिल्मों में अभिनय किया है। 2018 में इनकी एक और बड़ी फिल्म अक्षय कुमार और रजनीकान्त अभिनीत 2.0 (2018) आयी थी। अन्य कई हिंदी फिल्मों में आदिल हुसैन अभिनय कर चुके हैं तो वहीं दर्जनों शॉर्ट फिल्में भी कर चुके हैं। इनके विषय में यह

भी जानना आवश्यक है कि इन्होंने कई वर्षों तक थियेटर में भी अभिनय किया है साथ ही स्टैंडअप कॉमेडियन भी रह चुके हैं। 2017 में राष्ट्रीय पुरस्कार तथा 2018 में आमंदा पुरस्कार से पुरस्कृत हो चुके हैं।

अभिनय के अलावे पूर्वोत्तर भारत के कुछ ऐसे कलाकार भी रहे हैं जिन्होंने अपनी कला के जादू से सिनेमा प्रेमियों का मन मोह लिया है। 'पाप ऑन' और 'जुबीन गर्ग' दो ऐसे नाम हैं जिनके गाने आज हर एक संगीत प्रेमी गुनगुनाते मिल जाते हैं। परंतु बहुत कम को पता होगा कि ये दोनों गायक असम के रहने वाले हैं। पाप ऑन का गया हुआ गाना 'बुलेया' सुल्तान (2016) फिल्म का बहुत ही हिट हुआ तो वहीं जुबीन गर्ग का गाया हुआ गैंगस्टर (2006) फिल्म का गाना या अली आज भी उतना ही पसंद किया जाता है। इन दोनों ने कई हिंदी फिल्मों के गाने गाये हैं। इनकी दीवानीगी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज इन दोनों के बड़े-बड़े स्टेज शो हिंदी भाषी जनता के बीच खास करके कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच होते हैं जहां छात्रों का हुजूम उमड़ आता है।

अब कुछ ऐसी फिल्मों पर प्रकाश डालते हैं जिनकी शूटिंग नॉर्थ ईस्ट में हुई है। वैसे तो बहुत सी हिंदी फिल्मों की शूटिंग पूर्वोत्तर भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुई है, परंतु यहाँ कुछ प्रमुख फिल्मों का जिक्र ही किया जा रहा है। रॉक ऑन (2016) और रंगून (2017) की शूटिंग क्रमशः शिलांग और अरुणाचल प्रदेश, असम में हुई है। 2015 में आई फिल्म 'ऐसा ये जहां' की शूटिंग असम में हुई थी। साथ ही इस फिल्म के लेखक और निर्देशक 'विश्वजीत बोरा' भी असम के ही हैं। दंश (2005) की शूटिंग मिज़ोरम में हुई है। इस फिल्म की कहानी भी पूर्वोत्तर भारत की घटना से ही जुड़ी हुई है। इस फिल्म को मिज़ोरम नेशनल फ्रंट और इंडियन आर्मी के बीच हुई लड़ाई पर फिल्माया गया है। जॉन अब्राहम अभिनीत फिल्म साया (2001) की शूटिंग नागालैंड में हुई है। शाहरुख खान की हिट फिल्म कोयला (1997) की शूटिंग अरुणाचल प्रदेश में हुई है। कुर्बान (1991) की शूटिंग मेघालय में हुई है जिसमें ईस्टर्न एयर कमांड (अपर शिलांग) के दृश्य हैं। 1986 ई. में आयी फिल्म एक पल की शूटिंग असम के टी-गार्डेन में हुई है। ये गुलिस्तां हमारा (1972) की शूटिंग अरुणाचल प्रदेश और शिलांग में हुई है, जिसका एक गाना 'मेरा नाम आओ' नागालैंड की एक जनजाति के ऊपर फिल्माया गया है। ज्वेल थिफ (1967) सिक्किम को केंद्र में रख कर दृश्य फिल्माया गया है। अन्य कई फिल्में हैं जिनमें पूर्वोत्तर भारत के दृश्य हैं। अब केंद्र एवं राज्य सरकारों के बीच समन्वय से पूर्वोत्तर भारत में उग्रवादी गतिविधियां कम हुई हैं और उसका प्रभाव वहाँ के पर्यटन पर भी पड़ा है। अब तमाम क्षेत्रीय एवं हिन्दी फिल्मों की शूटिंग पूर्वोत्तर भारत में हो रही है।

कुछ उन व्यक्तियों का परिचय जिन्होंने किसी न किसी रूप में हिंदी सिनेमा में अपना योगदान दिया है। काल संध्या (1997) के निर्देशक 'भवेन्द्र नाथ सैकिया' हैं। 'जोहनु बरुआ' के निर्देशन में बनी फिल्म 'मैंने गांधी को नहीं मारा'(2005) देश-विदेश में बहुत सराही गयी। अरुणाचल प्रदेश के एक बाल कलाकार 'माटिन रे तांगु' हैं जिन्होंने 2017 ई. में सलमान खान अभिनीत फिल्म ट्यूब लाइट में बाल कलाकार के रूप में अभिनय किया है। उल्लेखनीय है, मात्र 5 वर्ष कीउम्र में इस फिल्म में किया गया अभिनय बहुत पसंद किया गया। इस आलेख में जितने फिल्मी कलाकारों और शख़्सियतों का ज़िक्र किया है वे अंतिम नहीं हैं, बल्कि

समय के साथ पूर्वोत्तर भारत के लोगों का हिंदी सिनेमा जगत में आने का सिलसिला बढ़ता ही जाएगा। अपनी योग्यता और मेहनत के बल पर आज पूर्वोत्तर भारत के कलाकार बॉलीवुड में अपना मुकाम हासिल कर रहे हैं। आज वहाँ के कलाकार हिंदी ही नहीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं की फिल्मों में भी अभिनय कर रहे हैं। आज वेब सीरीज का दौर चल रहा है जहां ऐसी दर्जनों वेब सीरीज हैं जिसमें पूर्वोत्तर भारत के कलाकार अपनी अदायगी से सभी को प्रभावित कर रहे हैं।

पूर्वोत्तर भारत का क्षेत्र जितना बड़ा है और वहाँ की जितनी जनसंख्या है उसके अनुपात में हिंदी सिनेमा जगत में उनकी भागीदारी न के बराबर ही मानी जाएगी। क्या वजह है कि हिंदी सिनेमा में गिने चुने 4-5 राज्यों के कलाकारों की भरमार है? क्या नॉर्थ ईस्ट के लोग हिंदी सिनेमा में काम करना नहीं चाहते हैं? क्या यहाँ प्रतिभाएँ नहीं हैं? क्या वेइस देश के नागरिक नहीं हैं? इन सभी बिन्दुओं पर हिंदी सिनेमा जगत के धुरंधरों को विचार करना चाहिए। जितनी विविधता हमारे देश में है उतनी फिल्मों में भी दिखनी चाहिए। विविधता में एकता ही हमारी पहचान है और इस पहचान को हमें धूमिल नहीं होने देना है। पूर्वोत्तर भारत के कलाकारों की जितनी संख्या हिंदी सिनेमा में बढ़ेगी, हिंदी सिनेमा का विस्तार और स्तर उतना ही अधिक बढ़ेगा। पूर्वोत्तर के लोगों को शेष भारत से जोड़ने का बड़ा जरिया हिंदी सिनेमा बन सकता है।

संदर्भ :-

[1]http://vanchitvimarsh.blogspot.com/2017/12/blog-post.html?m=1,

[2]https://www.jansatta.com/sunday-magazine/literature-and-cinema/204973/?utm_source=whatsapp_web&utm_medium=social&utm_campaign=socialsharebuttons

[3]m.hindustantimes.com,indian film industry expected to earn $ 3.7 billion by 2020. That's 25000 crore, sep 25, 2016

[4]pramodgaikwad,indianexpress.com,February 20, 2016

[5]WEBDUNIA, डैनी: कभी दोस्त, कभी दुश्मन, समय ताम्रकर, रविवार, 16 अप्रैल,

[6]https://theprint.in/theprint-profile/identity-music-bhupen-hazirika-the-man-who-united-assam-talked-inclusivity/275471/

(लेखकीय परिचय: *अतुल वैभव दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधरत हैं।)*

***